रस सिद्धान्त —

Uma Pandey
B.A. III Yr.
Skt Deptt (content)

हास्य रस Contd.

उपर्युक्त श्लोक किसी परिहासप्रिय व्यक्ति और भण्डभिक्षु (भण्डभिक्षु) का संवाद है।

'अरे भिक्षु! तुम माँस खाते हो?' (भिक्षु आशा के विपरीत निर्लज्जता से उत्तर देता है)

'अरे भाई! मांस का क्या मजा, यदि उसके साथ मदिरा न मिले।'

'तो मदिरा भी तुम्हें प्यारी है?'

'हाँ यदि वेश्याओं के साथ बैठकर पीने को मिले तो क्या कहना?' "अरे वेश्याओं के लिए तो धन चाहिए, तुम्हारे पास वह कहाँ से आया?" "या तो जुआ खेलकर या फिर चोरी करके।" "तो तुम जुआ खेलने और चोरी करने का भी धन्धा करते हो?" "क्यों नहीं, बरबाद आदमी और करेगा भी क्या?"

(यहाँ विनोदी भिक्षु 'विभाव', मांसभक्षणादि 'अनुभाव' तथा चपलता, धृष्टता आदि 'व्यभिचारी' भाव हैं। इन सबसे सम्पुष्ट होकर 'हास' नामक 'स्थायी भाव' ही हास्य रस कहलाता है।

③ करुण रस -

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के वनगमन के समय उनकी माता कौशल्या विलाप करती हुई कहती हैं —

'अदृष्ट दुःखो धर्मात्मा सर्वभूतप्रियंवदः।
मयि जातो दशरथात् कथमुञ्छेन वर्तयेत्॥
यस्य भृत्याश्च दासाश्च स्याद्वन्यन्नानि भुञ्जते।
कथं स भोक्ष्यते रामो वने मूलफलान्ययम्॥ (ii)
(रामायण)

अर्थात् 'जिसने कभी दुःख नहीं देखा, जो धर्म को अपनी आत्मा मानता है, जो सभी प्राणियों के प्रति मधुरवचन बोलनेवाला (चक्रवर्ती महाराज) दशरथ और मुझ कौशल्या का पुत्र है। (वह मेरा राम वन में जाकर) जंगली मुन्यन्नों (मुनि + अन्नों) को चुनकर कैसे जीवन धारण करेगा॥?"

"जिसके घर में वेतन पाने वाले सेवक तथा नित्य-दास भी स्वादपूर्ण अन्न अर्थात् अनेक व्यञ्जनों का उपभोग करते हैं। वही यह राम वन में जाकर कन्दों और जंगली फलों को कैसे खा सकेगा?"

यहाँ भी, आलम्बन राम, इनकी प्रियंवदता आदि उद्दीपन, विलापादि अनुभाव तथा 'ग्लानि' आदि व्यभिचारी भावों की सहायता से कौशल्या का शोक रूप स्थायी भी उपचित होकर करुण रस का रूप धारण कर लेता है।

(4) रौद्ररस -

'वेणीसंहार' नाटक के धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य का वध कर दिए जाने पर उनके पुत्र अश्वत्थामा की क्रोधपूर्ण उक्ति -

"कृतमनुमतं दृष्टं वा यैरिदं गुरुपातकं
मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः।
नरकरिपुणा सार्धं तेषां सभीमकिरीटिना -
मयमहमसृङ्मेदोमांसैः करोमि दिशां बलिम्॥

(वेणीसंहार)

अर्थात् "गुरुवध-रूप इस महान् पाप को, मनुष्य के रूप में पशुओं के समान, हाथ में शस्त्र धारण किए हुए मर्यादा-रहित जिन आप लोगों ने किया है, समर्थन किया है, या देखा है, मैं आज नरकासुर को मारकर अभिमान से फूले हुए कृष्ण, भीम तथा अर्जुन आदि इन सबको मार० Could.

Scanned with CamScanner